आलोचना
त्रैमासिक
ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

स्वातन्त्रयोत्तर कथा साहित्य में नारी चेतना

गीतांजली अत्री
शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

मानव सृष्टि में साहित्य एक ऐसी विधा है जिसे काल खण्ड में बांटा तो जा सकता है लेकिन अगल नहीं यिका जा सकता। युग परिवर्तन के साथ–साथ साहित्य एवं लेखन संबंधी अभिरूचियों में बदलाव आया है। बदलते सामाजिक, आर्थिक, नैतिक संबंधों ने स्त्री–पुरूष की आदिम राग शक्ति, काम ओर प्रेम को भी दूषित कर दिया है।

भारतीय साहित्य में हजारो ग्रंथ, नाटक, कहानी संग्रह विद्यमान हैं जो हमारे ऋषी मुनियों द्वारा लिखे गये हैं।

भारतवर्ष में हजारों भाषाएं विद्यमान हैं और उनमें लिखे गये साहित्य का अकूत भण्डार विद्यमान है। किसी स्थान का साहित्य उस काल खण्ड से प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से प्रभावित होता है जिसमें उस स्थान पर कोई घटनाक्रम घटित हुआ है। भारतवर्ष में स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया जिसके फलस्वरूप देशवासियों के मन–मस्तिष्क पर उसका गहरा प्रभाव हुआ और उसकी झलक हमें तत्कालीन साहित्यक लेखों, कवितओं, समाचार पत्रों के माध्यम से ज्ञात होती है। साहित्य की हर विधा का मनुष्य के जीवन पर प्रभाव पड़ता है लेकिन कथा साहित्य उनमें प्रमुख है क्योंकि कथाओं के नायक, पात्रों तत्वों का उदभव समाज के अन्दर उपस्थित लोगों में से होता है और वही कथाएं परम्परागत रूप से पीढी दर पीढी सुनाई व गाई जाती है। ब्रिटिश राज्य के विदेशी प्रभाव ने हमारे सम्पूर्ण देश के अस्तित्व को प्रभावित किया। इसका प्रभाव नारी जीवन पर भी पड़ा इस समय समाज ने स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय, महात्मा गांधी द्वारा सामाजिक व नारी चेतना के आन्दोलन को उग्र रूप से समर्थन देना शुरू किया। साथ ही स्त्री शिक्षा का प्रसार किया। इस सदी के प्रथम 40–50 वर्षों को नारी नागरण का युग कहा जा सकता है और स्वतंत्रता के पश्चात जो युग आरंभ होता है उसे नारी प्रगति का स्वातन्त्रोतर भारत में नारी की भूमिका बदली है। नारी द्वारा अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित करने के लिए विद्रोह के स्वर मुख किये जिसके परिणाम स्वरूप स्वतन्त्रयोत्तर महिला कहानी कारों ने अपनी रचनाओं में नारी की सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं पाश्चात्य दृष्टिकोण और बदलते परिवेश को उकेरने की शुरूआत की है।

चेतना जगत में प्रकृति ने दो रूपों की उत्पत्ति की – नर एवं मादा। चेतना जगत का सर्वाधिक प्रभाव मानव पर पड़ा। नारी के अस्तित्व में सचेतना है परन्तु नारी के स्वतंत्र अस्तित्व को स्वीकारा नहीं गया। नारी को अबला, मानिनी, महिला, वामा ओर थोषा आदि नामों से उल्लेख है। ये सारे शब्द पुरूषों द्वारा व्यक्त किए गए। डॉ. शीला रजकर ने ठीक कहा 66 उसके देवी, दानवी, आदर्श, आदर्शहीन, पूज्य और निन्दनीय सभी रूप पुरूष धुरी के चहुंओर घूमने वाले रूप हैं। पुरूष द्वारा नारी के लिए एकांगी दृष्टिकोण अपनाया गया परिस्थिति, कार्य एवं भाव जगत के अनुसार नारी के

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

विभिन्न रूप प्रचलित हैं इसका प्राकृतिक रूप प्रत्येक समय में एक ही रहा है नारी का मानवी रूप अपने अस्तित्व को तलाशता है। पंत जी ने ठीक लिखा ''योनि नहीं है रे नारी वह भी मानवी प्रतिष्ठित उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहे न नर पर अवसित। नर–नारी के सहज स्नेह से सूक्ष्म वृत्ति से विकसित आज मनुज जग में मिट जाये कुत्सित लिंग विभाजित।

चेतना से तात्पर्य – भावना, विचार और संवेदना आदि से है चेतना शब्द चेत, शब्द से बना जिसका अर्थ संज्ञा, ज्ञान, चित से है चेतना को हम मन का भाव भी कह सकते हैं इसे हम ज्ञानात्मक पहलू में विद्यमान पाते हैं इसका उद्देश्य ''सर्वे भवन्तु सुखिन है। परन्तु अगर हम भारतीय साहित्य पर दृष्टिपात करें तो नारी चेतना के स्वतंत्र अस्तित्व को नहीं स्वीकारा गया। अतः आप विश्व परिप्रेक्ष्य में नारी में एक स्फूर्ति, एक नया बोध और एक जिज्ञासा दिखाई देती है। अतः नारी अब स्वयं के दोयम दर्जे को अस्वीकार करती है। आज की नारी अपने लक्ष्य को स्वयं निर्धारित कर रही है वह समूल परिवर्तन को चाहती है। वह चेतना की ओर अग्रसर है और निरन्तर प्रेरित और प्रयत्नशील है।

स्वतंत्रता पूर्व हिन्दी साहित्यकारों में ज्यादातर पुरूष साहित्य का ही वर्चस्व रहा। इस समय नारी जीवन ओर चेतना जैसे विषय पुरूष कथाकरों द्वारा ही उठाये जाते थे। इस समय मुख्य कहानीकारों के विषयों में राष्ट्रीय भावना, राष्ट्रीय सुधार, राष्ट्रीय क्रांति, आर्य समाज आदि विषय सम्मिलित थे। स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद भारतीय साहित्य पर गांधीवादी धारणा के साथ–साथ नारी मुक्ति, नारी चेतना के स्वर मुखर होने लगे। कथा साहित्य के क्षेत्र में दिनकर, सप्रे, शुक्ल जी ने नये आयाम स्थापित किये। सन् 1950 के पश्चात की कथा साहित्य में क्रमशः व्यक्तिकता का दबाव बढ़ता गया। सन् 1962 में भारत–चीन युद्ध से रोमैटिक सरकार ने हमें अमिट रूप से मोह मुक्त कर दिया इसलिए मार्क एवं फ्रायड के प्रभावों में आगे बढ़ कर अस्तित्ववादी दर्शन ाने जीवन के बुनियादी सवालों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया जिससे सातवें दशक में सं?ास, अलगाव बेगालेपन ओर उब से संबंधी कहानियां लिखी गईं।

वैदिक साहित्य अथवा संस्कृत साहित्य के रचियता की ओर ध्यान देने पर सभी साहित्य पुरूषों द्वारा लिखा जान पड़ता है। ईसा पूर्व भी महिला साहित्यकारों का कोई भी उल्लेख नहीं है।

हिन्दी कहानी के विकास की दृष्टि से विपेथ्य काल का उल्लेखनीय इस समय प्रेमचंद ने हिन्दी कहानी को मजबूत नींव ही नहीं दी बल्कि उसे कलात्मक उंचाई भी प्रदान की। इस युग में हिन्दी कहानी अपने विकास की प्रारंभिक अवस्थाओं को पार कर श्रेष्ठ रूप में पहुंच गई थी।

इस युग की नारी लेखिकाओं में सुभद्रा कुमारी चौहान की कहानियां सामाजिक–पारिवारिक जीवन के व्यावहारिक चित्रण के लिए विशेष प्रसिद्ध है। ''बिखरे मोती'' (1932) और ''उन्मदिनी'' (1934) में संगृहित कहानियों में उन्होंने नारी की परिस्थितियों, भावनाओं, समस्याओं का सजीव चित्रण किया। प्रेमचन्द की अर्द्धांगनी शिवरानी देवी ने भी कुछ सामाजिक कहानियों की रचना की जो कि ''कौमुदी'' (1937) में प्रकाशित है।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

उषादेवी मित्रा द्वारा रचित भावुक कल्पनामयी सामाजिक कहानियों का भी यही दौर था जब उन्होंने ''गोधूलि'' ''देवदासी'' ''मन का मोह'' आदि की रचना की जो कि उस समय की पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी।

इस काल की अन्य उल्लेखनीय लेखिकाओं में जानकी देवी, गौरा देवी, ठकुरानी शिवमोहिनी, सुशीला देवी, धनवती देवी, श्रीमति मिश्र महिला आदि है।

जन जागरण और राष्ट्रीय चेतना को आधार बनाकर लिखने वाली लेखिकाओं में वनलता देवी, सरस्वती देवी, हेमन्त कुमारी और प्रियम्बदा देवी के नाम उल्लेखनीय है।

स्वतंत्रता के पश्चात हिन्दी कथा साहित्य में एक दुविधा की स्थिति दिखाई दी जिसके फलस्वरूप एक नई कहानी के विकास की यात्रा की शुरूआत होती है।

आजादी मिलने के पश्चात हमने जिस समाज की कल्पना की थी उससे दूर एक विसंगतियों से भरा चुनौतिपूर्ण वातावरण मिला। इस सामाजिक आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तन के दौर में हिन्दी साहित्य की कहानी विधा की नये स्वरूप में नये शिल्प के साथ जन्म हुआ जिसे ''नई कहानी'' की संज्ञा से अभिहित किया।

प्रारंभ में प्रगतिवादी विचारधारा प्रमुख होकर आई। कहानीकार अज्ञेय ने व्यक्ति के आत्मसंर्घष तथा परिवेश के संघर्ष का उल्लेख किया।

अतः स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात महिला लेखिकाओं का एक वर्ग उठ खड़ा हुआ। समाज में फैली अराजकता, अस्थिरता, भ्रटाचार को अपनी– अपनी तरह से इन लेखिकाओं ने व्यक्त किया। आज महिला कहानीकार की दो पीढ़ियां एक साथ कहानी सृजन में लगी हुई हैं। पहली पीढ़ी कीक लेखिकाएं वे हैं जो नई कहानी के दौर के समय काल खण्ड कीे अपनी रचनाओं में उकेरती हैं। इस समय की कुछ प्रमुख लेखिकाओं में शशिप्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियम्बदा, ममता कालिया आदि प्रमुख नाम हैं।

दूसरी पीढ़ी में वे लेखिकाएं हैं जिन्होंने अस्सी के दशक से लिखना प्रारम्भ किया। इनमें कुछ प्रमुख मृदुला गर्ग, चित्रा मुब्दगल, राजी सेठ, मंजुल भगत, निरूपमा, सेवती मेहरूनिसा परवेज आदि हैं।

स्त्री लेखिकाओं का रचना संसार पुरूषों से कुछ हद तक भिन्न होता है। प्रभा खेतान के अनुसार ''वास्तविकता को केवल पुरूष की दृष्टि से ही देखना ज्ञान की प्रणाली सीमित करता है।''

नारी के अनुभव और नारी जीवन का बोध पुरूष से अनेक अर्थों में भिन्न होता है वह अपने निजता को अपने ढंग से लिख सकती है।

मन्नु भण्डारी (कृषक), कृष्णा सोबती ओर शिवानी (पुष्पहार) ने आधुनिक नारी की मनःस्थिति, पारिवारिक जीवन में पति–पत्नी के विषयों को लेकर अपनी रनचनाएं की है। जबकि उद्वाा पियवंदा में वैविध्य ओर आधुनिक जीवन के अनेक आयाम दिखाई पड़ते हैं।

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

मन्नु भण्डारी नारी भावों, स्थिति, विशेष में पुरूष के मन में जगने वाली शंकाओं ईर्ष्याओं आदि को अपनी रचनाओं में प्रमुखता दी है। जबकि कृष्ण सोबती जी ने अपनी बोल्डनेस से एक खास पहचान बनाने में सफल रही है।

राजी सेठ, मजुल मगल, सुधी अरोड़ा सूर्यबाला चन्द्रकान्ता नमिता सिंह, अल्का सरावगी द्वारा परिवार के वृद्धों के अकेलेपन, आर्थिक स्थिति, परनिर्भरता, उपेक्षा का मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया गया है। इसके अलावा स्त्री मुक्ति को लेखिकाओं द्वारा अपने अन्दाज में बोल्ड पात्रों की रचना कर उठाया गया है। जिसके अन्तर्गत अपने परिवार और पति को अपनी नियति नहीं मानकर परित्याग कर स्वतंत्र जीवन जीने की इच्दा उकेरी गई है। उषा किरण, किरण खान की कहानियों के स्त्री पात्र भी पुरूष वर्चस्व को प्राय सभी वर्गों में झेलते चित्रित किये गये हैं। इस वर्ग में कुछ लेखिकाएं सचेत भाव से स्त्रीवादी हैं। जिसके कारण उनकी रचनाओं में अक्सर नारी विद्रोह का भाव दिखता है इस दृष्टि से मणिका मोहिनी की कहानियां विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
उपरोक्त लेखिकाओं के वर्ग के अलावा इस समय एक अन्य स्त्री लेखिकाओं का समूह है जो मूल रूप से स्त्रीवादी नहीं है। इसके उपरान्त भी उन्होंने शोषित स्त्री पात्रों का चित्रण किया है। उनके द्वारा अपनी रचनाओं में बलात्कार, उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव नैतिक मूल्यों के विघटन टूटते रिश्तों, दहेज, तलाक आदि का लेखन किया है। कुछ लेखिकाओं ने तो अपनी कुछ कहानियों में यौन संबंधों का काफी खुला और साहसिक चित्रण किया है। नये समय की इन लेखिकाओं का रचना संसार सिर्फ स्त्री–पुरूष विषयों तक सीमित नहीं है इन लेखिकाओं द्वारा कई विविधतापूर्ण विषयों पर कहानियां लिखी हैं। नासिरा शर्मा द्वारा हिन्दू, मुस्लिम, यहूदी से संबंधित विषयों पर अपनी कहानियां लिखी तो चन्द्रकांता द्वारा कश्मीर संस्कृति और आतंकवाद की पीड़ा का मार्मिक चित्रण किया। अलका सरावगी की रचनाओं में मारवाड़ी समाज में उपस्थित घटनाओं को उकेरा है।
स्त्री की अस्मिता और मुक्ति का सवाल उनकी मुख्य रचनात्मक चिन्ता रही है। कृष्णा जी सपनों के संसार से नही बल्कि जीवन के यथार्थ से कहानी का जाला बुनती हैं। कृष्णा सोवती की हर रचना हिन्दी साहित्य में एक घटना के रूप में आई। उनके मुख्य संग्रह ''बादलों के घेरे'' दोहरी सांझ, पहाड़ों के साये तले आदि कहानियां स्त्री–पुरूष संबंधों के विभिन्न परिपार्खों को छूती है। उषा प्रियवंदा की कहानियों की दुनिया औरसीमित है। उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाओं का केन्द्र प्रेम को रखा उनकी रचनाओं के प्रारंभ में प्रेम के मानसिक पक्ष को चित्रित किया तो बाद में शारीरिक पक्ष भी सम्मिलित हो गया।
सत्तर के दशक में ''सचेतन कहानी'' कहानी का आन्दोलन प्रवर्तित हुआ। इसके अन्तर्गत निषेधात्मका प्रवृत्तियों का विरोध करते हुए जीवन की सकारात्मक सचेत भाव से जानने और जीने पर बल दिया। सचेतन के दौर के पश्चात ''अकहानी आन्दोलन का सूत्रपात हुआ इसके अन्तर्गत कहानियों में मूल वस्तु स्त्री पुरूष की संसर्ग जनित लालसा संभोग और प्रताड़ना है। अकहानी आन्दोलन के पश्चात

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

कमलेश्वर के ''समांतर कहानी'' ने स्थान लोलिया जिसके अन्तर्गत जनवारी कहानी की चर्चा होने लगी। इस काल खण्ड में स्वप्न और यथार्थ का मिश्रण कर रचनाएं की गईं।

स्वतंत्र भारत में क्रमशः शिक्षित स्रियों की संख्या में बहुत तेजी आयी। पचास साठ के दशक के दौरान जो लेखिकाएं सामने आईं उनकी संख्या बहुत कम थी लेकिन शिक्षा के प्रसार की सुखद परिणाम यह हुआ कि उनके बाद की लेखिकाओं की संख्या में बढ़ोतरी हुई तथा अब दलितों, शोषितों, उत्पीड़ित स्त्रियों से संबंधित विषयों को उठाया जाने लगा।

इस दौर की अधिकांश लेखिकाएं गृहणियां भी हैं। इसलिए उनकी रचनाओं में परिवार में उपस्थित पात्रों का ही केन्द्र बिंदू बनाकर कहानियां लिखी गईं। इसके सबसे कॉमन विषय परिवार में स्त्री की दशा को तो प्रत्येक कहानीकार के द्वारा छुआ गया है। कई लेखिकाओं द्वारा परिवार में उपस्थित वृद्धों की दुर्दशा का चित्रण भी किया गया है।

स्वतंत्रता पू एवं पश्चात साहित्य का विवेचना करने पर प्रमुख रूप से बंगाली, हिन्दी, गुजराती साहित्य का प्रभाव स्वतंत्रता संग्राम में देखने को मिला है।

प्रारम्भ से ही पुरूष रचनराकारों का साहित्य की विधाओं पर वर्चस्व रहा। पूर्वोत्तर साहित्य के केन्द्रा में रचनाओं में सामाजिक मुद्दों, राजनैतिक एवं देशभक्ति से जुड़े मुद्दे मुख्यत्य उठाये गये लेकिन स्वतंत्रता के पश्चात साहित्य की संकीर्ण विधा का प्रभाव ज्यादा देखने को मिले साहित्य में व्यक्ति विशेष और विशेष संदर्भ की रचनाओं की भरमार होने लगी। स्वतंत्रता के पश्चात उन मुद्दों पर खुल कर लिखा जाने लगा जिन पर पहले समाज बात करने से भी बचता था। सेक्स, दोहरा चरित्र, स्त्री–पुरूष संबंध की कहानियां लेखों, नाटकों का विशेष स्थान दिखाई देने लगी। सोशल मीडिया के प्रभाव में आने के पश्चात इन विषयों में अचानक बहुत तेजी आई। आज समाज में इन्हीं प्रकार के नाटकों, चलचित्रों में देखने को मिलता है।

वर्तमान में साहित्य में यथार्थ को मुख्य विषय मान कर उसका केन्द्र में रख कर रचने लिखने का दौर चल रहा है।

आज की महिलाओं का लेखन भोगे हुए सच पर आधारित है। तस्लीम नसरीन के शब्दों में ''नारी शिक्षा में तात्कालिक तौर पर पर नारियों को पुरूष के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करने लायक, योग्यता जरूर बख्शी पर इससे उनकी प्रताड़ना और मनोबल गिराने की साजिशों ने जहां एक ओर उसे आत्मविश्वास से दीप्त किया वहीं दूसरी ओर उसकी घुटन को और भी ज्यादा बढ़ाया। अतः हिन्दी साहित्य में नारी लेखिकाओं और उनके पात्रों द्वारा अपने भविष्य के प्रति बेहद सचेते एवं चेतना युक्त आत्मविश्वास के साथ अपने आप को स्थापित करने में प्रयासरत दिखाई दे रही हैं।

संदर्भ ग्रंथ

1. स्त्री विमर्श – विविध पहलू, कल्पना वर्मा 2009, पेज न. 239
2. स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कथा साहियत्य में नारी के बदलते संदर्भ , डॉ . शीला रजवार, पेज न. 19

ISSN No. 2231-6329
(UGC-CARE Listed Group-I)

3. ममता कालिया के कथा साहित्य मे ं नारी चेतना, डॉ . सानपशाम 2010, पेज न, 61
4. ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चे तना डॉ . सानपशाम 2010, पेज न.,
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ . नगेन्द्र व डॉ . हरदयाल, 2013, पेज न. 569
6. कृ ष्णा सोबती की कहानी कला, सु प्रि या. पी 2008, पेज न. 15
7. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ . नगेन्द्र व डॉ . हरदयाल, 2013, पेज न. 728
8. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ . नगेन्द्र व डॉ . हरदयाल, 2013, पेज न. 729
9. कृ ष्णा सोबती की कहानी कला, सु प्रि या. पी 2008, पेज न. 17
10. हंस : अक्टूबर 1994, पेज न. 75
11. ममता कालिया की कथा में नारी चे तना डॉ . सानपशाम 2010
12. कृ ष्णा सोबती की कहानी कला, सु प्रि या. पी 2008, पेज न. 24
13. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ . नगेन्द्र व डॉ . हरदयाल, 2013, पेज न. 474
14. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ . नगेन्द्र व डॉ . हरदयाल, 2013, पेज न. 748
15. ममता कालिया की कथा में नारी चे तना डॉ . सानपशाम 2010, पेज न. 110
16. हंस : जून 2003, पेज न. 92